© 2018 IJRTI | Volume 3, Issue 9 | ISSN: 2456-3315

गिरिजा कुमार माथुर की काव्यात्मक अनुभूति

डॉ. हरि राम आलड़िया

सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
स्वामी विवेकानंद राजकीय महाविद्यालय, खेतड़ी, जिलाः झुन्झुनूं (राजस्थान)–333503

गिरिजाकुमार माथुर जी हिन्दी की नई काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके हृदय पर नौ वर्ष की अवस्था में ही काव्य काव्य–संस्कार पड़ चुके थे और वे ब्रजभाषा में कविता लिखने लगे। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में कवि सम्मेलनों वे भाग लेने लगे। ब्रजभाषा में कविता करने के उपरान्त कुछ दिनों तक छायावादी शैली पर भी कविताएं लिखते रहे। अध्ययनकाल के दौरान विक्टोरिया कॉलेज,ग्वालियर में आयोजित कवि सम्मेलन में आपकी छायावादी शैली की कविता सुनकर स्वयं माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा था कि यदि तुम इस गीत के आगे अपना नाम न लिखकर महादेवी का नाम लिख दो, तो कोई पहचान नहीं सकता। इस ब्याज स्तुति को सुनकर छायावादी शैली पर रची समस्त कविताएं नष्ट कर दी तथा प्रण लिया कि मैं जब तक अपनी कोई मौलिक राह नहीं ढूंढ नहीं लूंगा, तब तक कोई कविता नहीं लिखूंगा। यह घटना सन् 1937 ई. की थी और तभी से आपने काव्य की परम्परागत राह को छोड़कर नूतन मार्ग अपनाने का संकल्प लिया। इसके उपरान्त माथुर जी ने नये प्रयोग भी आरम्भ कर दिये तथा सन् 1938 तक नये–नये प्रतीक ,नवीन उपमान आदि का प्रयोग करने में अपनी पहचान बना ली।

गिरिजा कुमार माथुर आधुनिक संदर्भों में नव काव्योन्मेष के सचेतन अध्येता और सजग दृष्टा रहे हैं। उनकी कविताओं का प्रधान स्वर सौंदर्य, प्रेम और तद्जनित पीड़ा,विषाद हैं,किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे समसामयिक यथार्थ से कटे हुए हैं। उन्होंने आम आदमी की संवेदना को अपनी कविता में स्वर प्रदान किया है। उनके काव्य के आरम्भिक चरण में प्रेम,रोमांस,सौंदर्य एवं वैयक्तिक पीड़ा की अधिक अभिव्यक्ति हुई है,जबकि परवर्ती रचनाओं में व्यक्ति, समाज,प्रकृति,पृथ्वी,राजनीति, राष्ट्र, प्रेम और समग्र जीवन एक नए रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

अनुभूति के विविध अन्य रूप

माथुर की कविताओं में संवेदनात्मक विविधता की झांकी दृष्टिगोचर होती है। वे अपने विस्तृत अनुभव को कविता के माध्यम से जन–जन की अनुभूति से जोड़ता चाहते हैं। संवेदना का कोई भी क्षण हो, वे शब्दों के द्वारा कविता में सुरक्षित रखना चाहते हैं। उनके काव्य में संवेदनात्मक विविधता के रंग नीचे प्रस्तुत है।

1 क्षणानुभूति

नई कविता का कवि क्षणानुभूति को अधिक महत्त्व देता है। वह किसी भी क्षण की अनुभूति को अपने शब्दों में बांधकर श्रोता और पाठकों को सराबोर करना चाहता है। आज के व्यस्त और कुंठा भरे जीवन में एक पल की खुशी भी कवि भोग लेना चाहता है, इसलिए कवि संवेदना का छोटा–सा अंश भी अधिकाधिक सम्प्रेषणीय बनाकर प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य समझता है –

''छिपती, दिपती, मद्धिम पड़ती

धुंधली, पूरी, फिर, कटी फांक

यह मैं

मेरा व्यक्तित्व बोध

क्षण–जीवन का उपभोग परम

पंखों सी गिरी शिलाएं

जिसकी चमकदार

+ + + + + + + + +

चमको तुम मद्धिम चांद

अभी फिर बादल आएंगे

उड़ने दो रेशम बाल

कि क्षण इतिहास बनायेंगे।''[1]

2 सांस्कृतिक चेतना

गिरिजा कुमार माथुर ने अपनी काव्य–रचनाओं में सांस्कृतिक विरासत को पूरी तरह सहेजा है। विदेशी संस्कृति के अंधानुकरण के कारण जीवन संवेदनाहीन और जटिलताओं में बंध गया है। विश्व भर में हमारी सांस्कृतिक श्रेष्ठता की पहचान है, परन्तु जीवन की विषमताओं के कारण हम अपनी पहचान भूलते जा रहे हैं। कवि अपने कवि–कर्म की सार्थकता इसी बात में समझता है कि हमारी संस्कृति अक्षुण्य बनी रहे। इसके लिए हर संभव प्रयासरत है। होली, दीवाली, ईद, दशहरा आदि त्योंहार हमारे धार्मिक उत्सव और संस्कृति के प्रतीक समझे जाते हैं, परन्तु कैबरे डांस, रात्रि पार्क भ्रमण तथा सिनेमा जैसे आधुनिक मनोरंजन के साधनों ने इन उत्सवों को भूला दिया है। कवि की 'होली' और 'नयी दीवाली' कविता इसी प्रकार की कविताएं हैं जिनमें सांस्कृतिक चेतना के दर्शन किये जा सकते हैं –

''ले वैभव का धान्य महालक्ष्मी घर–घर में उतरे

ऋद्धि सिद्धि से भरे ग्राम

नगरों में श्री–सुख बिखरे

मेरी इस सांवर धरती पर

सेना चाँदी बरसे

ऐसा दीपक जले कि जिससे

स्वर्ग धरा को तरसे।''[2]

3. सामाजिकता की भावना

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही अपना सर्वांगीण विकास करता हैं। परिवार समाज की अभिन्न इकाई है। उनकी रचनाओं में अनेक जगह पर सामाजिक समस्याओं का चित्रांकन देखने मिल जाता है। समाज में रह कर व्यक्ति को जीवन पर्यन्त अनेक सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। एक कृषक पिता का अपने जीवन में अपनी बेटी के विवाह के सपने का बड़ा ही महत्त्व होता है। कवि ने किसान की इस अमूर्त संवेदना को में मूर्त रूप दिया है। कवि के शब्द संवेदना के धरातल पर व्यक्ति के मन को छू लेनेवाले हैं, यथा –

''अचानक वे किसान

देखने लगे आसमान

हल्की–हल्की बदरी की फुहिया थीं

बोले,

बस कुछ थोड़ी छींटा–छाँटी हो जाय

बच जाय फसल ये ओलों से

अच्छे दाम बिक जाय

कुछ घर में भी आ जाय

अब की जेठ

इसी सरसों से बिटिया के हाथ पीले कराना है।''[3]

4. लघु मानव की प्रतिष्ठा

छायावादी काव्य प्रकृत्यांचल से बाहर नहीं आ सका तथा प्रगतिवाद पूंजीवाद को कोसता रह गया। नयी कविता में आम आदमी के स्वर को अभिव्यक्ति मिली है। लघु मानव की प्रतिष्ठा गिरिजा कुमार माथुर के काव्य की एक अन्य प्रमुख विशेषता है।

साधारण आदमी महंगाई, भुखमरी, बीमारी, भ्रष्ट नौकरशाही से पूरी तरह त्रस्त है। कवि ने छोटे से छोटे आदमी के दर्द की अनुभूति को अपनी कविता में जगह दी है। एक उदाहरण से स्पष्ट है –

''हम सब बौने हैं

मन से, मस्तिष्क से भी

भावना से, चेतना से भी

बुद्धि से, विवेक से भी

क्योंकि हम जन हैं

साधारण हैं

हम नहीं विशिष्ट

– क्योंकि हर जमाना हमें

चाहता है बौने रहें ।''[4]

5 राजनैतिक चेतना

वर्तमान समय में राजनीति स्वार्थ और मोह की राजनीति हो गई है। कुर्सी बचाने के लिए लोग साम, दाम, दंड और भेद नीति का सहारा लेते हैं। सत्ता के गलियारों में बहुमत जुटाने के लिए एक–एक सीट के लिए बोली लगती है। राजसुख भोग चुके नेता वंशवाद की बेल को अमर बनाने की चाहत में राजनीतिक आदर्श भूला बैठे हैं। जनता की सेवा करना और गरीबी हटाना सत्ता प्राप्ति का महज एक नारा बनकर रह गया है। बदले की भावना के कारण एक पार्टी के सत्ता से पदच्युत होते ही दूसरी पार्टी उसके कामों में घपले साबित करने के लिए अनेक प्रकार के जाँच आयोग बैठाती है। निहित तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति हेतु मारपीट, हत्या, लूट–मार, आतंक की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। कूट साजिशों के कारण जीवन मूल्यों में गिरावट आने लगी है। राजनैतिक पतन के साथ–साथ चारित्रिक पतन भी हो रहा है। नयी कविता में इस प्रकार की राजनीति के विरोध की सशक्त अभिव्यंजना देखने को मिल जाती है। माथुर जी भी नयी कविता के प्रमुख कवि हैं। उनके काव्य में राजनैतिक चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। 'शिला पंख चमकीले', 'साक्षी रहे वर्तमान', 'मैं हूँ वक्त के सामने' 'कल्पान्तर' और 'पृथ्वीकल्प' में उनकी राजनैतिक चेतना से साक्षात्कार किया जा सकता है।

'सड़क से देह दर्शन' कविता भ्रष्ट राजनीति की पोल खोलती है। सत्तासीन लोग तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर पेश करते हैं। चापलूस प्रवृत्ति के लोग उनकी हर बेइमानी पर परदा डालकर उन्हें श्रेष्ठ साबित करने में ही लगे रहते हैं। सत्य को जनता तक पहुँचने से पूर्व ही दबा दिया जाता है। इस प्रकार की राजनीति से दुखी हो कर बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से कुत्सित राजनीति के चहरे से नकाब हटाते हुए कवि कहते हैं –

''यह कौन–सी व्यवस्था है

नाटक के सारे पात्र जहाँ

खलनायक हैं

खुशामदी विदुषक

जिनके हर कुकर्म पर

तालियां बजाते हैं

+ + + + + +

हाकिम तोड़ते हैं नियम

कानून कायदे सिर्फ मामूली लोगों के फरायज हैं।''[5]

नयी कविता में राजनैतिक परिवेश का चित्रण करते समय नये कवियों ने कहीं–कहीं शब्दों की मर्यादाओं का उल्लंघन किया है, जबकि गिरिजा कुमार माथुर का काव्य इसका अपवाद है। उनके राजनीतिक चित्रण की कलात्मकता पर प्रखर आलोचक **डॉ. रामविलास शर्मा** ने कहा है – ''जो कवि राजनीतिपरक कविताएं लिखते हैं, उन्हें एक बार गिरिजा कुमार माथुर की राजनैतिक कविताएं अवश्य पढ़नी चाहिए।''[6]

आज राजनीति पर अपराध जगत अपना शिकंजा कसता जा रहा है। अपराधी किस्म के लोग कैद में रहकर ही चुनाव जीत जाते हैं। डाकू और हत्यारे राजनीति में अपना भविष्य तलाश रहे हैं। अधिसंख्य नेताओं के जीवन में बेदागी के नाम पर सफेद पोशाक ही बची है। आज नेतागिरी उद्योग बन गया है एवं राजनीति में सच्चाई की कोई कीमत नहीं रही है। ईमानदार आदमी राजनीति में आने से डरता है। कवि ने नेता के जीवन और चरित्र पर प्रकाश डालते हुए व्यंजनात्मक स्वर में कहा है –

''हर जगह

हर बात पर

जो हज़ारों झूठ बोले हैं

जरा–सा ढक्कन चोरियों से हटते ही

खौफ खा जाता है

नेता

एक फूला, गैस भरा गुब्बारा है

जिसे पिन भर भी सच्चाई

होती न गंवारा है।''[7]

माथुर ने राजनीति के हर पक्ष को अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं और पाठकों के समक्ष रखा है। राजनीति में व्यक्ति के अवमूल्यन को अभिव्यक्ति देकर सत्तासीन नेताओं की पूरी सच्चाई सबके सामने बयान की है। जनसाधारण महंगाई की मार से कुंठित होकर लाचार और बेबसी में जीने को लाचार हैं। कवि ने सांकेतिक और सहज भाषा में अपना आक्रोश प्रकट किया है।

6 भदेश का चित्रण

प्रयोगवादी कवियों ने अस्वस्थ सौंदर्य चेतना एवं विकृत रुचि के कारण कुरूप, असुन्दर एवं भद्दे दृश्यों का भी चित्रण रुचिपूर्ण किया है। गिरिजा कुमार माथुर ने भी कहीं–कहीं इस प्रकार के चित्रण में रुचि दिखाई है। तानाशाही शासकों के अत्याचारों का यथार्थ का चित्रण करते समय इस प्रकार की अभिव्यक्ति कहीं–कहीं देखने को मिल जाती है, यथा–

''आबनूसी बदन बुत है

सिर्फ बहती है नाक से खून की धारा

मोटी उँगली घुसा देता है एक की योनि में

माल कितना खरा चुस्त है

दूसरी की छाती मुट्ठी से

पकड़ता टटोलता है

माल कितना करारा है।''[8]

7 दार्शनिक चेतना

काव्य में दर्शन को बोझिल विषय माना जाता है। कविता में दर्शन का प्रयोग रस के साधारीकरण को और भी दुरूह बना देता है। गिरिजा कुमार माथुर की रचनाओं में सामाजिक परिवेश और जीवन की विविधता को अभिव्यक्ति देते समय कवि की दर्शनिक चेतना का साक्षात्कार किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में पुनर्जन्म को अत्यधिक महत्ता प्राप्त है। श्रीमद् भगवत गीता में बताया गया है कि आत्मा कभी नहीं मरती है। वह अजर अमर है। आत्मा द्वारा नया शरीर धारण करने की घटना को पुनर्जन्म कहते हैं। व्यक्ति की सांसारिक पदार्थों के प्रति आसक्ति और ममता ही पुनर्जन्म का हेतु मानी जाती है। माथुर जी का पुनर्जन्म में

प्रगाढ़ विश्वास है। वे अपने अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिए पुनः जन्म लेना चाहते हैं। उनकी दार्शनिक संवेदना निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है –

''शरीर तो मिट्टी में मिल जाएगा

मन यही रह जायेगा

यही इन मनहरन दृश्यों में

यह बार–बार

इन्हीं में जन्मेगा

इन्हीं में वापस जाएगा।''[9]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गिरिजा कुमार माथुर का काव्य विविधताओं का संगम है। उसमें एक तरफ नारी के अप्रतिम सौंदर्य के दर्शन होते है; तो दूसरी तरफ नारी को कबीर की तरह छलना और माया कह कर उसकी निंदा की है। इसी प्रकार ग्राम्य प्रकृति और जीवन का मनोरम चित्रण है तो दूसरी तरफ नगरीय जीवन की विसंगति पर भी प्रकाश डाला है। इस प्रकार कवि का काव्य अनुभूतियों के विविध के रंगों के इन्द्रधनुष से अपनी अनूपम छटा बिखेर रहा है। गिरिजा कुमार माथुर ने जगत और जीवन की प्रत्येक संवेदना को शब्दों में बांध कर अपनी अद्‌भुत कल्पना शक्ति के द्वारा साहित्य प्रेमियों के समक्ष रखा है।

संदर्भ सूची–

1. शिला पंख चमकीले, गि.कु. माथुर, चंद्र खंडों की आत्मा, पृ. 41–42
2. धूप के धान, गिरिजा कुमार माथुर, नयी दीवाली, पृ. 39
3. मैं हूँ वक्त के सामने, गिरिजा कुमार माथुर, गांव में फागुन, पृ. 100
4. जो बंध न सका, गिरिजा कुमार माथुर, बौनों की दुनिया, पृ. 9
5. साक्षी रहे वर्तमान, गिरिजा कुमार माथुर, दफ्तर, पृ. 33
6. गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन, डॉ. शारदा राउत, पृ. 131
7. साक्षी रहे वर्तमान, गिरिजा कुमार माथुर, नेता–गाथा, पृ. 38
8. पृथ्वीकल्प, गिरिजा कुमार माथुर, महारात्रि, पृ. 72
9. मैं हूँ वक्त के सामने, गिरिजा कुमार माथुर, पुनर्जन्म की नई कामना, पृ. 83

IJRTI